चोल राजवंश

प्रिलिम्स के लिये:

चोल युग में कला और शिल्प कौशल, चोल मूर्तिकला।

मेन्स के लिये:

चोल राजवंश।

चर्चा में क्यों?

तमिलनाडु आइडल विंग CID ने वर्ष 1960 के दशक में तमिलनाडु के नरेश्वर शिव मंदिर से चुराई गई और वर्तमान में संयुक्त राज्य अमेरिका के विभिन्न संग्रहालयों में रखी **छह चोल-युग की कांस्य मूर्तियों** को पुनः प्राप्त करने के लिये कदम उठाए हैं।

- इंडो-फ्रेंच इंस्टीट्यूट, पुद्दुचेरी के पास उपलब्ध छवियों की मदद से मूर्तियों को हाल ही में अमेरिका में सफलतापूर्वक खोजा गया था, जिसने वर्ष 1956 में नौ कांस्य मूर्तियों का दस्तावेजीकरण किया था। उनमें से सात मूर्ति पाँच दशक पहले चोरी हो गई थी।
- संस्थान ने **त्रिपुरानथकम, त्रिपुरासुंदरी, नटराज, दक्षिणमूर्ति वीणाधारा और संत सुंदरर** की प्राचीन पंचलोहा मूर्तियों की छवियाँ उनकी पत्नी परवई नटचियार के साथ प्रदान की थीं।

मध्यकालीन चोल राजवंश

- **परिचय:**
  - **चोलों (8-12वीं शताब्दी ईस्वी) को भारत के दक्षिणी क्षेत्रों** में सबसे लंबे समय तक शासन करने वाले राजवंशों में से एक के रूप में याद किया जाता है।
  - चोलों का शासन 9वीं शताब्दी में शुरू हुआ जब उन्होंने सत्ता में आने के लिये पल्लवों को हराया। इनक**शासन 13वीं शताब्दी तक पाँच से अधिक शताब्दियों तक चलता रहा।**
  - **मध्यकाल** चोलों के लिये पूर्ण शक्ति और विकास का युग था। यह राजा आदित्य प्रथम और परान्तक प्रथम जैसे राजाओं द्वारा संभव हुआ।
  - यहाँ से राजराज चोल और राजेंद्र चोल ने तमिल क्षेत्र में राज्य का विस्तार किया। बाद में **कुलोतुंग चोल ने मज़बूत शासन स्थापित करने के लिये कलिंग पर अधिकार कर लिया।**
  - यह भव्यता 13वीं शताब्दी की शुरुआत में **पांड्यों के आगमन तक चली।**

//

- **प्रमुख सम्राट:**
  - **विजयालय:** चोल साम्राज्य की स्थापना **विजयालय** ने की थी। उसने 8वीं शताब्दी में तंजौर साम्राज्य पर अधिकार कर लिया और पल्लवों को हराकर शक्तिशाली चोलों के उदय का नेतृत्व किया।
  - **आदित्य प्रथम:** आदित्य प्रथम विजयालय साम्राज्य का शासक बनने में सफल हुआ। उसने राजा अपराजित को हराया और साम्राज्य ने उसके शासनकाल में भारी शक्ति प्राप्त की। उन्होंने वदुम्बों के साथ पांड्या राजाओं पर विजय प्राप्त की एवं इस क्षेत्र में पल्लवों की शक्ति पर नियंत्रण स्थापित किया।
  - **राजेंद्र चोल**: यह शक्तिशाली राजराजा चोल का उत्तराधिकारी बना। **राजेंद्र प्रथम गंगा तट पर जाने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्हें लोकप्रिय रूप से गंगा का विक्टर कहा जाता था।** इस काल को चोलों का स्वर्ण युग कहा जाता है। उनके शासन के बाद राज्य में व्यापक पतन देखा गया।
- **प्रशासन और शासन:**
  - चोलों के शासन के दौरान पूरे दक्षिणी क्षेत्र को एक ही शासी बल के नियंत्रण में लाया गया था। चोलों ने निरंतर राजशाही में शासन किया।
  - विशाल राज्य को प्रांतों में विभाजित किया गया था **जिन्हें मंडलम के रूप में जाना जाता था।**
  - प्रत्येक मंडलम के लिये अलग-अलग गवर्नर को प्रभारी रखा गया था।
  - इन्हें आगे **नाडु नामक ज़िलों में विभाजित किया गया था जिसमें तहसील शामिल थे।**
  - शासन की व्यवस्था ऐसी थी कि चोलों के युग के दौरान प्रत्येक गाँव स्वशासी इकाई के रूप में कार्य करता था। चोल कला, कविता, साहित्य और नाटक के प्रबल संरक्षक थे; प्रशासन को मूर्तियों और चित्रों के साथ कई मंदिरों और परिसरों के निर्माण में देखा जा सकता है।
  - **राजा केंद्रीय प्राधिकारी बना रहा जो प्रमुख निर्णय लेता था और शासन करता था।**
- **वास्तुकला:**
  - चोल वास्तुकला (871-1173 ई.) मंदिर वास्तुकला की द्रविड़ शैली का प्रतीक था।
  - उन्होंने मध्ययुगीन भारत में कुछ सबसे भव्य मंदिरों का निर्माण किया।
  - बृहदेश्वर मंदिर, राजराजेश्वर मंदिर, गंगईकोंड चोलपुरम मंदिर जैसे चोल मंदिरों ने द्रविड़ वास्तुकला को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया। चोलों के बाद भी मंदिर वास्तुकला का विकास जारी रहा।

चोल मूर्तिकला के प्रमुख बिंदु:

- चोल मूर्तिकला का एक महत्त्वपूर्ण प्रदर्शन **तांडव नृत्य मुद्रा में नटराज की मूर्ति** है।
  - हालाँकि सबसे पहले ज्ञात नटराज की मूर्ति, जिसे **ऐहोल में रावण फड़ी गुफा में खोदा** गया है, प्रारंभिक चालुक्य शासन के दौरान बनाई गई

दृष्टि The Vision

थी, **चोलों के शासन के दौरान मूर्तिकला अपने चरम पर** पहुँच गई थी।

- 13वीं शताब्दी में चोल कला के बाद के चरण का चित्रण **भूदेवी, या पृथ्वी की देवी को विष्णु की छोटी पत्नी के रूप में दर्शाने वाली मूर्ति** द्वारा किया गया है। वह अपने दाहिने हाथ में एक लिली पकड़े हुए आधार पर एक सुंदर ढंग से मुड़ी हुई मुद्रा में खड़ी है, जबकि बायाँ हाथ भी उसी तरफ लटका हुआ है।
- चोल कांस्य प्रतिमाओं को **विश्व की सर्वश्रेष्ठ प्रतिमाओं में से एक** माना जाता है।

Q. भारत के इतिहास में निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिये: (2020)

1. राजा भोज के अधीन प्रतिहारों का उदय
2. महेन्द्रवर्मन प्रथम के अधीन पल्लव सत्ता की स्थापना
3. परान्तक प्रथम द्वारा चोल शक्ति की स्थापना
4. पाल वंश की स्थापना गोपाल ने की थी

प्राचीन काल से आरंभ करके उपरोक्त घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम क्या है?

(a) 2 - 1 - 4 - 3
(b) 3 - 1 - 4 - 2
(c) 2 - 4 - 1 - 3
(d) 3 - 4 - 1 - 2

उत्तर: (c)

व्याख्या:

- पल्लव वंश 275 ईसवी से 897 ईसवी तक अस्तित्व में था, जो दक्षिणी भारत के एक हिस्से पर शासन करता था। महेंद्रवर्मन प्रथम (571-630 ईसवी) के शासनकाल के दौरान पल्लव एक प्रमुख शक्ति बन गए, जिन्होंने वर्तमान आंध्र क्षेत्र के दक्षिणी हिस्से और वर्तमान तमिलनाडु के उत्तरी क्षेत्रों पर शासन किया।
- पाल वंश ने 8वीं से 12वीं शताब्दी तक बिहार और बंगाल में शासन किया। इसके संस्थापक, गोपाल (750-770 ईसवी), एक स्थानीय सरदार थे जो अराजकता के काल में आठवीं शताब्दी के मध्य में सत्ता में आए थे।
- आठवीं शताब्दी के मध्य से मध्यदेश पर प्रभुत्व राजस्थान में स्थानिक लोगों के बीच दो विशिष कुलों की महत्त्वाकांक्षा का विषय बन गया, जिन्हें गुर्जर और प्रतिहार के नाम से जाना जाता है। 851 ईसवी के एक समकालीन अरब विवरण के अनुसार, राजा मिहिर भोज (प्रतिहार राजाओं में सबसे महान) (840-851 ईसवी) भारत के उन राजाओं में से थे जिन्होंने अरब आक्रमणकारियों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी ।
- चोल साम्राज्य की स्थापना विजयालय ने की थी। चोलों का शासन 9वीं शताब्दी में शुरू हुआ जब उन्होंने सत्ता में आने के लिये पल्लवों को हराया। मध्यकाल चोलों के लिए पूर्ण शक्ति और विकास का युग था। परान्तक प्रथम (907-953) ने राज्य की नींव रखी। वह उत्तरी सीमा को नेल्लोर

(आंध्र प्रदेश) तक ले गया, जहाँ राष्ट्रकूट राजा कृष्ण III के हाथों हार के कारण उसकी विजय यात्रा रुक गई। परान्तक दक्षिण में अधिक सफल रहा, जहाँ उसने पांड्य और गंगा दोनों को हराया

Q. चोल वास्तुकला मंदिर वास्तुकला के विकास में एक उच्च वॉटरमार्क का प्रतिनिधित्व करती है। विचार-विमर्श करना। (2013)

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/chola-dynasty-1